दुआ ऐसे मांगे

मुफ्ती अहमद खानपुरी दा.ब.

उर्दु किताब हदीस के इस्लाही मज़ामीन से लिप्यांतर किया गया है.

दुआ कबूल करवाने का एक अमल

जो अमल खालिस अल्लाह के लिये किया जात है चाहे वो कैसा ही मामूली सा कयुं न हो अल्लाह के यहा उस अमल की बडी कदरो किमत होती है, और उस्की बरकत से अल्लाह दुआएं भी कबूल करते हैं चुंनान्चे दुआ के आदाब मे एक चीझ ये भी लिखी गई है के आदमी दुआ करते हुवे अपने आमाल मे से कोई ऐसा अमल जो खालिस अल्लाह के लिये किया हो उसका भी वास्ता और वसीला दे सकता है, उसके सदका व तुफैल मे अल्लाह दुआ कबूल करते है अगर कोई ऐसा अमल न हो तो दुआ से पेहले कोई ऐसा अमल करले और फिर दुआ करे तो भी दुआ कबूल होती है.

दुआ

या अल्लाह तु हमारे गुनाहों को माफ फरमा, हमारी खताओं को माफ फरमा, नफस और शैतान की शरारतों से हमारी पुरी पुरी हिफाजत फरमा,

या अल्लाह हमारी तमाम ईबादतों मे और तमाम नेक
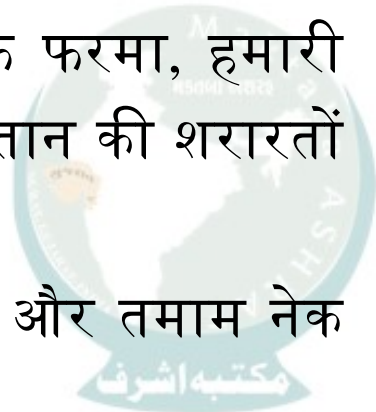
आमाल मे हमको ईख्लास अता फरमा, नीय्यतों को ठीक करने तौफीक अता फरमा,

या अल्लाह इन गफलतों के नतीजे मे उन चीझों मे हम बे खौफ है आफीय्यत के साथ उन गफलतों को दूर फरमा, उसका एहसास अता फरमा कर उसके लिये कोशिश की तौफिक अता फरमा, और हमारे लिये उसको आसान फरमा,

या अल्लाह हम तो कमजोर है मुजाहदे की ताकात हम मे नही हे,

या अल्लाह हम तो मुजाहदों को बरदाशत भी नही कर सकते,

या अल्लाह तु तो करीमों का करीम है, तैरे खजाने भरे हुवे है,

या अल्लाह बगैर मुजाहदे के भी तु अता फरमा सकता है,

या अल्लाह हमे ये नेअमत सिर्फ अपने फजलो करम से अता फरमा,

या अल्लाह मुजाहदों वालों को भी जब तु देता है तो अपने फजल से ही अता फमाता है, वरना कोई भी अपने मुजाहदे से किसी भी चीझ का हकदार नही बनता,

या अल्लाह हम तो बगेर किसी हक के सिर्फ तैरे फजलो

करम के सदके उस चीझ का तुजसे सवाल करते हैं, हमे अपने तमाम आमाल मे इख्लास और लिल्लाहिय्यत अता फरमा, नीय्यतों को ठीक करने तौफीक अता फरमा,

या अल्लाह हमे माल की मुहब्बत और ओहदो की मुहब्बत से दुनीया की मुहब्बत से नजात अता फरमा, और हर अमल तैरी जाते आली के वास्ते खालिस तौर पर अंजाम दैने की तौफीक अता फरमा,

या अल्लाह नफस व शैतान की शरारतों से हमारी पुरी पुरी हिफाझत फरमा, हर अमल को सही तरीके से अंजाम दैने की तौफीक अता फरमा,

या अल्लाह तु हमारे वालिदैन की हमारे बडे बच्चो की हमारे भाई बहेनों की हमारे रिश्तेदारो की उस्तादो और बुजुर्गो की दोस्तो की हम पर एहसान करने वालो और हम से मिलने जुलने वालो की जिन्हो ने हमको दुआओं के लिये कहा या लिखा या जो हम से दुआओं की उम्मीद रखते हैं और तमाम मोमिन मर्दो और मोमिन औरतो मुस्लिम मर्दो और मुस्लिम औरतो की पुरी उम्मते मुहम्मदीय्यह की मगफिरत फरमा,

या अल्लाह तु हमारे छोटे बडे जाहिर और छुपे हुवे अगले और पिछले सारे गुनाहों को माफ फरमा, हमारे गुनाहो
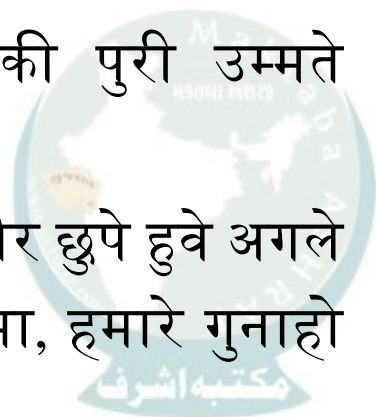
को नेकीयो से बदल दे,

या अल्लाह हुजूरﷺ के तरीको को अपनी जिन्दगी के हर शोअबे मे जारी करने की हमे तौफीक अता फरमा,

या अल्लाह मजलिस मे जितने भी मौजूद है सब की पुरी पुरी मगफिरत फरमा, बीमारों को पूरी सिहत, जल्दी से जल्दी सिहत, और हमेशा की सिहत, अता फरमा, और जिन लौगों ने अपने बीमारों की सिहत के लिये दुआओं की दरख्वासतें की है,

या अल्लाह उन तमाम के बीमारों को पूरी सिहत, जल्दी से जल्दी सिहत, और हमेशा की सिहत, अता फरमा,

या अल्लाह जिन लोगो पर कर्ज है उनके कर्जो की अदाईगी की गैब से शकलें पैदा फरमा, जो परेशान हाल है उनकी परेशानीयों को दुर फरमा, जिन की औलाद शादी की उमर को पोहोच चुकी है उनको नैक सालेह जोड अता फरमा, जिन के लिये शादी के असबाब नही है आफिय्यत के साथ उनको निकाह के असबाब अता फरमा,

या अल्लाह जो बे औलाद है उनको नेक औलाद अता फरमा, जिन की औलाद ना फरमान है उनको फरमाबरदार बनादे, जो लौग नरीना (male) औलाद के ख्वाहिशमंद है उनको नरीना औलाद अता फरमा,

या अल्लाह जो लौग बेगुनाह जेलों मे बंद है या अल्लाह उन तमाम को आफिय्यत के साथ रिहाई नसीब फरमा.
या अल्लाह सिर्फ अपने फजल से सबके लिये रिहाई मुकद्दर फरमा, खुसुसी फजल फरमा, इस उम्मत के हाल पर रहम फरमा,
या अल्लाह जिन लौगो पर मुकद्दमात है आफिय्यत के साथ उनको छुटकारा अता फरमादे,
या अल्लाह जिनकी जो जो जरूरते है सिर्फ अपने फजलो करम से पुरा फरमा, इस मजलीस मे जितने भी मौजूद है सबके दिलों के राजों से और दिलों के हाल तु जानता है और तैरे खजाने भरे हुवे है,
या अल्लाह सबकी जाईज मुरादें सिर्फ अपने फजल से पुरी फरमा,
या अल्लाह हुजुरे अकरमﷺ ने जितनी खैर व भलाई तुजसे मांगी वो सब हमको अता फरमा और हुजूरे अकरमﷺ ने जिन बुराईयों से पनाह चाही या अल्लाह उनसे हमारी हिफाजत फरमा,
या अल्लाह हमारी दुआओं को महज अपने फजलो करम से कबूल फरमा, आमीन.